

कौबेरि-छाणा-कर्त्ता ।

(गोमटसारके अनुसार)

प्रकाशक,

ब्रह्मचारी कुलोचन

सीन, आर्य मुनोगण, इन्दौर

चतुर्थ संस्करण

श्री नि० सं० २४७३

—ॐ—

मूल्य सदुपयोगे

प्रकाशन—

ब्रह्मचारी दुलीचन्द

उदासीन आश्रम तुमोगज, इन्दौर



मुद्रक—

प० राजमल शर्मा 'साहित्यरत्न'

प्रकाश प्रिंटिंग वर्क्स

एम टी क्लायमोर्फेट, इन्दौर

भूमिका



ग्रंथ विषयक परिचय

यह ग्रंथ है ता छे'तामा पर उपयोगी
बहुत है । क्योंकि हममें सब जीवों का
मैं नरमथा सज्जित सुगमता। स
ज्ञान ज्ञान रूप गन्ध और रस में
रचना का यह है । इनलिए हम ग्रंथ का
वितरण अधिक प्रसरण द्वारा उत्तम ही जीवों
का विचार प्राप्त होगा । इसमें जीवों की कम
मिश्रित स ज्ञाने पायी शुद्धात्मा सब
अवस्थाओं का द्रष्टा तथा भावपूर्ण से गति
इष्टिय पात्र कथायादि के मद से यह स्वरूप
कहा गया । ग्रंथका म चर्चाक्रम में तथा धीरे धीरे
न जाने धीरे धीरे उपदेश पाठ ग्रंथक ग्रंथमें

मैत्रिक (कठस्थ) गान करने के लिए गद्य रूप छोड़ें यद्य वाद्वा चौपाई में सध साधारण को यही सुगमता से गान का प्राप्ति हो सक इस प्रकार प्रथम करताने इस प्रथम की रचना की है ।

इस विषय के ज्ञान प्राप्ति के प्रथम तो पुनः ऋषियों के रच हुए गोमहृ सारादि अनक मौजूद हैं किन्तु ये प्रथम वडिन और निस्तुत हैं। इसलिये सब साधारण जीवों को उन प्रथमों के ज्ञान जितना लाभ पहुचना चाहिए उतना नहीं पहुचता इसलिये प्रथम कतान इस प्रथम की रचना सक्षिप्त और सरल रूप में की है ।

यह प्रथम है तो छोटा पर गोमहृ सारादि बड़े प्रथमों में प्रयश करान को मानो प्रयशिका तथा पुजो ही है ।

इस प्र. १ को बली भानि सशोधन का
प्रकाशित किया है तो भा. यन्त्रि हममें एष्टि
नय या प्रमाद यश फार् अगु छि रह गई हो
ता सज्जन जन हमें सूचित करें और पुद्
कर पढ़ें।

पाठकगण उचित है कि प्रत्येक विषय,
का ज्ञान से मनन पूरक पढ़ें जिससे परि
णामों की विनाशि दाय और आत्मा का वैमा
नया अथभाव दमा का भद ज्ञान का लाभ हा
जिससे प्रथ कर्त्त व प्रकाशक का परिश्रम
सफल हो।

मयदीय—प्रकाशक—

दातारो के नाम-- . .

प्रति सप्ताह

१०० श्री धृत भूषिता पतामीबाईजी - गया

१०० श्री मातेश्वरी शिखरचन्दजीपाटणी, गया

१०० श्री तजदुमारीबाईजी विनोद मिरस,

उज्जैन ने श्री रायबहादुर बाणिज्य

भूषण ताजिर उलमुल्क स्वर्गीय मेठ

माणिक्यचन्दजी साविन सेठी की

पुण्य स्मृति में ।

१०० श्री स्तनबाईजी धर्मपती माणिक्यचन्दजी

पाटणी (कम कलचन्दजी मूलचन्दजी)

इन्दौर

१०० श्री लाडबाईजी धर्मपती श्री स्व

सठ बन्नी साजी मल्लपुर (नगर)

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

कौकिसि-हाण-चर्चः ।

गाथा ।

ग इदिये च जाये,

जाये-वेय-यमाय-जाणं य ।

सजम-सग-देहमा-

भरिया समत्त-सणि-आहार ॥१॥

गुण-जीवा-गजघी

पाणा मग्गा य-मग्गा ओय ।

उवओगागिय कमसो

रीसनु पग्गणा भणिया ॥२॥

गाणपि य पच्चारि य

जाद य पु-व्वोटि-मज्जुया सज्जे ।

गण्हानि येग भणिया,

कमेण चउथीम टाणाणि ॥३॥

१ गति

२ इन्द्रिय

३ काय

४ योग

५ वेद

६ कषाय

७ ज्ञान

८ समय

९ दर्शन

१० लक्षणा

११ भव्य

१२ सम्यक्त्व

१३ सेनी

१४ आहारक

१५ गुणस्थान

१६ जीवसमास

१७ पर्याप्ति

१८ प्राण

१९ सज्ञा

२० उपयोग

२१ ध्यान

२२ आश्रय

२३ जाति

२४ कुल

चाँयोस ठाणांक उत्तर भेद

३

गति ४	३ अग्निराय
१ नरगति	४ नायुराय
२ तियंचगति	५ उररपतिराय
३ देगति	६ उमराय
४ गनुप्यगति	योग १५
इद्रिय ५	मनयोग ४
१ एक-इद्रिय	१ मत्यमनोयोग
२ दो-इद्रिय	२ अस्यमनोयोग
३ ती-इद्रिय	३ उभयमनोयोग
४ चार-इद्रिय	४ अनुभयमनोयोग
५ पाच-इद्रिय	वचनयोग ४
काम ६	१ सयवचनयोग
१ पूर्णाराय	२ असयवचनयोग
२ जयराय	

चौबीस ठाणोंके उत्तर भेद ४

३ उभयरचनयोग
 ४ अनुभयरचनयोग
 काययोग ७
 १ आदारिकाय
 २ आदारिक मिश्र
 ३ वैक्रियक काय
 ४ वैक्रियक मिश्र
 ५ आहारक काय
 ६ आहारक मिश्र
 ७ कर्मणि काय
 वेद ३
 १ स्त्री-वेद
 २ पुरुष-वेद

३ नपुंसक-वेद
 काय २५
 अन-तानुबधी ४
 १ क्रोध
 २ मान
 ३ माया
 ४ लोभ
 अग्रत्याह्वान ४
 १ क्रोध
 २ मान
 ३ माया
 ४ लोभ

८ चौपास ठाणोंके उत्तर भेद

प्रत्याख्यान ४

१ क्रोध

२ मान

३ माया

४ लोभ

संग्रहण ४

१ मोह

२ मान

३ माया

४ लोभ

अख्याय ९

१ दाम्य

२ रति

३ अरति

४ शोक

५ भय

६ जुगुप्सा

७ स्त्री-वेद

८ पुरुष-वेद

९ नपुंसक-वेद

ज्ञान ८

१ कुमनिज्ञान

२ कुप्रतिज्ञान

३ कुअधिज्ञान

४ सुमनिज्ञान

५ सुप्रतिज्ञान

६ चौबीस ठाणाके उत्तर भेद-

६ सुभगविशान

७ मन पर्ययधान

८ वेचल्लभान

गयन ७

१ असयन

२ सयमामयम

३ साम विक

४ देशोपस्थापन

५ पण्डितविशुद्धि

६ सूक्ष्मसापराय

७ यदारयात

दर्शन ४

चशुदर्शन

२ अचक्षुदर्शन

३ अग्रिदर्शन

४ केन्द्रदर्शन

ऐश्या ६

१ कृष्ण-ऐश्या

२ नीर " "

३ वापोत " "

४ पीत " "

५ पद्म " "

६ शुक्ल " "

भज्य २

१ भज्य, २ अभज्य

सम्यक्त्व ६

१ मिथ्यात्व-सम्य

चौथीस ठाणाके उत्तर भेद ७

० मामादन सम्ब	१ अग्र
३ मिथ "	६ अग्रुवन
४ उपदान "	६ प्रनत्त
६ वेदक "	७ अप्रमत्त
६ धायिक "	८ अपूर्वगुण
सैनी ०	९ अनिगुतिगुग
१ सैनी, ० अमैनी	१० सुम्भगायराय
जाडाय ०	११ उपशानमोह
१ जाडायक, २अमाहार	१२ क्षीगमो
गुग्म्वान १८	१३ सयोगभेदगी
१ मिष्याय	१८ अयोगकेवडी
० मामादन	जीरसनास १०
३ मिथ	२पृष्ठीनायसूम्भ, वादा

८ चौबीस ठाणाके उत्तर भेद

२ जलमायसूक्ष्म, गदर	पर्याप्ति ६
२ अग्निराय " "	१ आहार
२ वायुराय " "	२ शरीर
२ नित्यनिगो " "	३ इन्द्रिय
२ इतरनिगोद " "	४ आसोष्यवास
१ सप्रतिष्ठित प्रत्येक	५ भाषा
१ अप्रतिष्ठित " "	६ मन
१ दो-इन्द्रिय-जीव वा	प्राण १ ■
१ तीन " " "	५ इन्द्रिय-प्राण
१ चार " " "	१ मनोबल
१ सैनी-पंचे " "	१ तचनबल
१ असेनी " " "	१ कायबल
	१ आसोष्यवास प्राण
	१ आयु-प्राण

चौबीस टाणाके उत्तर भेद ०

सज्ञा ४

१ आहार भेदा

२ मय "

३ मैजुन "

४ परिग्रह "

उपयोग १२

८ शानोपयोग

४ दर्शनोपयोग

न्याय १६

आर्तध्यान ४

१ इष्टियोग

२ अनिष्टसयोग

३ पीडाधिनन

४ निदानन

रौद्रध्यान ४

१ हिमानंद

२ मृषानंद

३ चौर्यानंद

४ परिग्रहानंद

धर्मध्यान ४

१ आभाविचय

२ अपाविचय

३ विपाकविचय

४ सम्पानविचय

शुक्लध्यान ४

१ पृथक्त्ववितर्क

२ " " "

१० चौबीस ठाणाके उत्तर भेद

३ सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति	योग १७ पूर्वोक्त
४ व्युपगताक्रियानिवृत्ति	जाति ८४ लक्ष
आसन ५७	७ आर्य पृथ्वीमाय
मिथ्यात्म ५	७ " जलमाय
१ एकतमिथ्यात्व	७ " अग्निमाय
२ विनयमिथ्यात्व	७ " वायुमाय
३ निपरीत "	७ " नित्य निगोद
४ सशय "	७ " इतर निगोद
५ अज्ञान "	१० " वनस्पति
अत्र १२	२ " दो-इन्द्रिय
६ पदमाय रक्षा नहीं	२ " तीन-इन्द्रिय
७ इन्द्रिय वश नहीं	२ " चार इन्द्रिय
१ मन वश नहीं	२ " पंचेन्द्रि तिर्यच
पमाय २७ पूर्वोक्त	

चौर्यास ठाणाके उत्तर भेद ११

४ ॥ नाभक	८ लाख तान इद्रिय
४ ॥ देव	९ ॥ चार-इद्रिय
१४ ॥ मनुष्य	४३ ॥ पंचेन्द्रिय नियंच
कुल १९० ॥ ल को	१२ ॥ लाख जलचर
२२ लाख मोटि पृथ्वीकाय	१९ ॥ यलचर
७ ॥ जलकाय	१२ ॥ नमचर
३ ॥ अग्निकाय	२५ लाख नारक
७ ॥ वायुकाय	२६ ॥ देव
२८ ॥ वनस्पतिकाय	१४ ॥ मनुष्य
७ ॥ दो-इद्रिय	

१ गति	नरक
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
१ काय	अस (कार्माण १
११ योग	मन ४, रश्च ४, तैत्ति २
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	खी पुण्य-वेद रिना
६ ज्ञान	कुशान ३, सुशान ३
१ सयम	असयम
१ दर्शन	केरलदर्शन रिना
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्य	भव्य, अमय
६ सम्पत्त्व-	सत्र

१ सैनी	सैनी
२ आहारक	अनाहारक, अनाहारक
४ गुणस्थान	१।२।३।४ पर्यंत
१ जीयसमाप्त	पर्यंतिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ सज्ञा	सब
९ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
९ ध्यान	आर्त ४, रोद्ध ४, धर्म १
५१ आस्रव	छी १, पु १, जी २, आ
४ लक्षजानि	नरक सबधी
२५ ल०को०कुल	" "

१	गति	तिर्य्यच	
५	इन्द्रिय	सर्व	
६	काय	"	[यामा १]
११	योग	मनः, रजः औदा	२
३	वेद	सर्व	
२७	रूपाय	"	
६	ज्ञान	सुज्ञान १, दुज्ञान ३	
२	सद्यम	असद्यम, देशसद्यम	
१	दर्शन	केवलदर्शन विना	
६	लेख्या	सर्व	
२	भव्य	भय, अभव्य	
६	सम्पत्त्व	सर्व	

२	सेनी	सैनी, अमैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
५	गुणस्मान	१।२।३।४।५ पर्यंत
१९	जीवसमास	सप्त
६	पर्याप्ति	सप्त
१०	प्राण	मन
४	संज्ञा	सप्त [दर्शन ३
९	उपयोग	सुमान ३, सुमान ३
११	ध्यान	आर्ज ४, रौद्र ४, धर्म ३
५३	आत्मय	आहा २ वैकि २ विना
६२	लक्ष जाति	निर्यंच । एवेद्रीमे
१३४॥	ल को कुल	॥ } - पचेद्री पर्यंत

१	गति	ननुष्य
१	इन्द्रिय	पचेंद्री
१	काय	अस
१३	योग	वैक्रियक द्विक रिना
३	वेद	सत्र
२५	कपाय	"
८	ज्ञान	"
७	सयम	"
४	दर्शन	"
६	लेइया -	"
२	भज्य	भज्य अभज्य
६	सम्यक्त्व	सत्र

१	सैंगी	सैनी
२	आहारक	आहार्य, अनाहार्य
१४	गुणस्थान	सर
१	जीरसमास	पचद्रा सैना
६	पर्याप्ति	सर
१०	प्राण	सर
४	सजा	सर
१०	उपयोग	सर
१६	ध्यान	सर
५५	आश्रय	वैश्रियक द्विक रिना
१४	लक्षजानि	मनुष्य मन्वधी
१४	लक्षकोटिकुल	मनुष्य सम्प्रयी

१	गति	देव
२	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्र
३	काय	ऋत (वर्माण १
४	योग	म ४, य ४, वक्ति २,
५	वेद	स्त्रा-पुरुष-वेद
६	रूपाय	नपुंसक-वेद विना
७	ज्ञान	सुज्ञान ३, सुज्ञान ३
८	सयम	असयम
९	दर्शन	केवल-दर्शन विना
१०	लेख्या	पी प शु । पर्याप्त अपेक्षा
११	”	सर । अपर्याप्त अपेक्षा
१२	भन्य	मय, अमय
१३	सम्यक्त्व	सय

१	सेना	सैना
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
४	गुणस्थान	१।२।३।४ पयन
१	जीवसमास	पंचेद्री मेनी
६	पर्याप्ति	सत्र
१०	प्राण	सत्र
८	सज्ञा	मय (दर्शन ३ ।
०	उपयोग	कुतान ३, मुत्तान ३,
१०	ध्यान	आर्ति ८, गद्य ५, धर्म २ ।
५२	आसन्न	नष्ट, ओटा २, आहा २ मिना
८	लक्षजाति	देव सम्बन्ध
२६	लब्धोक्तुल	" "

१	गति	नियच
१	इन्द्रिय	एक-इन्द्रिय, स्पर्शन
५	काय	रम विना । [कामाण ।
३	योग	आ का , ओ मिथ
१	वेद	नपुसक
१३	कषाय	स्त्री पुरुष-वत् विना
२	ज्ञान	कुमति, कुश्रुति
१	सयम	अमयम
१	दर्शन	अचक्षु
३	लेश्या	कृष्ण, नील, कायोत ।
२	भव्य	भय्य, अभव्य, ।
१	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व ।

- | | | |
|----|-----------|---------------------------|
| १ | सैनी | अमनी |
| २ | आहारक | आहार, अन्नाहारक |
| १ | गुणस्थान | मिथ्या |
| १२ | जीयसमास | पेड्डी सम्बन्धी |
| ४ | पर्याप्ति | माया, मन विना |
| ४ | प्राण | स्पर्शन, वायु, आयु, श्वास |
| ४ | सज्ञा | सब |
| ३ | उपयोग | कुशान २ अचतुद १ |
| ८ | ध्यान | आर्ष ४, रैड ४ |
| ३८ | आद्य | मि २ अ ७ क २ ३ यो ३ |
| ८२ | लक्षजाति | पेड्डी सम्बन्धी |
| ३७ | ल०को० कुल | पेड्डी सम्बन्धी । |

१ गति	तिर्यंच
१ इन्द्रिय	भेदिय
१ काय	ग्रम
४ योग	ओदा २, अनु ध, का
१ वेद	नपुस्र
२१ कपाय	छी पुरूप वेद त्रिना ।
१ सयम	असयम
२ ज्ञान	कुमनि, कुशुनि
१ दर्शन	अचक्षुर्शन
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोन
२ भव्य	भव्य, अभव्य
१ सम्यक्त्व-	मिथ्याय

- १ सैनी असना
- २ आहारक आहारक, अनाहारक
- १ गुणस्थान दिव्यान्
- १ जीवसमास दो इदिय
- ६ पर्याप्ति मन विना
- ६ प्राण इदिय २, काय, वचन,
- ४ सज्ञा सन् । [आस, आयु ।
- ३ उपयोग बुद्धान २, अचक्षुर्दग्ध
- ८ ध्यान आन ४, रौद्र ४
- ४० आस्रव मि ५ अ ८ व २३ यो
- २ लक्षजाति दो-५८ ५
- ७ ल को कुल-५० १

१ गति	नियच
१ इन्द्रिय	तान-इन्द्रिय
१ काय	वस
४ योग	आ २, वच १, वा १
१ वेद	नपुसक
२३ कषाय	खी-पुरुष-वेद विना
२ ज्ञान	बुमनि, बुध्नुति
१ समय	अमयम
१ दर्शन	अचक्षुर्दर्शन
३ हृदया	रघा, नील, कापोत
२ भव्य	मव्य, अभव्य
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व

- | | | |
|----|-----------|-------------------------|
| १ | सैनी | असैनी |
| २ | आहारक | आहारक, अनाहारक |
| १ | गुणस्थान | गिन्यान् |
| १ | जीवसमास | तान-इन्द्रिय |
| ८ | पर्याप्ति | मन विना |
| ७ | प्राण | इन्द्रि ३, काय १, वचन १ |
| ८ | सजा | सन (सास १, जाड १) |
| १ | उपयोग | बुझान २, अचक्षुझान |
| ८ | घ्यान | अर्ति ४, गैड ४ |
| ४१ | आम्रव | मि ५ अ ९ क २३ योग ४ |
| १ | लक्षजाति | तीन-इन्द्रिय सम्बन्धी |
| ८ | छ. को | कुल-तान-इन्द्रिय ८ |

१ गाने	नियन्त्र
१ इन्द्रिय	चार-इन्द्रिय
१ काय	त्रस (कायमाग १
४ योग	आ २, अनुभययच १,
१ घेद	नगुमर
२३ कपाय	छा-पुरुष-वेद गिता ।
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुति
१ सयम	असयम
२ दर्शन	चपु, अचपु
३ लेश्या	टण्ण, नात्र, कापोल ।
२ भव्य	भव्य, अभव्य
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व

४	गति	सत्र
१	इन्द्रिय	पौष्टी
१	काय	श्रम
१५	योग	सत्र
३	वेद	मत्र
२५	कपाय	सत्र
८	ज्ञान	मत्र
७	सयम	सत्र
४	दर्शन	मत्र
६	लेइया	मत्र
२	मन्य	मन्य, अभय
३	सम्पत्त्य	सत्र

२	सैनी	सत्र
२	आहारक	सत्र
१४	गुणस्थान	सत्र
२	जविसमास	सैनी, अमैनी-पंचेदिय
२	पर्याप्ति	सत्र
१०	प्राण	सत्र
४	सजा	सत्र
१२	उपयोग	सत्र
१८	ध्यान	सत्र
५७	आम्र	सत्र
२६	लक्ष जाति	पंचेदिय
१०८॥	ल० को० कुल	पंचेदिय

४	गति	दे० म० नि० ना०
४	इष्टी	एकद्विय विना
१	काय	श्रम
१५	योग	सत्र
३	षेद	छा, पुरष, नपुसर
२५	रूपाय	सत्र
८	ज्ञान	सत्र
७	सयम	सत्र
४	दर्शन	सत्र
६	लेक्ष्या	सत्र
१	भण्य	भय, अमय
६	सम्यक्त्व	सत्र

- २ सैनी मना, अमैनी
 २ आहारक आहारक, अनाहारक
 १४ गुणस्थान सत्र
 ६ जीवसमास त्रय सम्बन्धी
 ६ पयाप्ति सत्र
 १० प्राण मत्र
 ४ सज्ञा मत्र
 १२ उपयोग गान ८, दान ४
 १६ ध्यान मत्र
 १७ आत्मय मत्र
 १२ लक्ष जाति त्रय मत्र
 १२॥ लक्षकोटि कुटु त्रय सत्र

३२ सत्य व अनुभय मन वचन योगमं

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्री
१ काय	ग्रस
१ योग	स्वकीय
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ समय	सब
४ दृशन	सब
६ लक्षणा	सब
२ भव्य	भव्य, अभय
६ सम्पत्त्व	सब

नोट—अनुभय वचन योग में यह विशेषता है कि विमल चतुस में भी पाया जाता है ।

- | | | |
|------|-------------|----------------------|
| १ | सेनी | मैनी |
| १ | आदाग्व | आदाग्व |
| ११ | गुणध्यान | अधो- विना |
| १ | जीवसमास | पंचे- मैनी |
| २ | पर्याप्ति | गर |
| १० | प्राण | मर |
| ॥ | समा | मर |
| ११ | उपयोग | मर |
| १७ | ध्यान | सुगन्धक्रियानि० विना |
| ४३ | आसन्न | नि-अ१२३२५५०१ |
| ० | लक्षजानि | पंचेडी सर (मर्द५) |
| १०८॥ | लक्षकारिकुल | पंचेडी मर्द |

३४ सत्य व उभय मा-चयनयोग में

८ गति	सत्र
१ अद्वैत	पञ्चश्री
१ काय	ऋस
१ योग	स्व-काय
३ वेद	सत्र
२० कपाय	मत्र
७ ज्ञान	वेद-ज्ञान विना
७ समय	सर्व
१ दर्शन	वेद-दर्शन विना
६ लेश-श	सर्व
२ भव्य	मु-य, अम-य
६ सम्यक्त्व	सत्र

२१ स्थान ।

१	सनी	नी
१	आहारक	आहार
१०	गुणस्मान	गुण रोग विना
२	जीवसमास	सनी, परेरी
३	पर्याप्ति	मय
१०	प्राग	मय
४	समा	मय
१०	उपयोग	गन ७, १ न ३
१४	ध्यान	अंक १ शुद्ध विना
४३	आम्रव	निःशुद्ध २२२ व्याग?
२६	लक्ष जाति	पंचेष्टा मय
१०८॥	ल० फो० कुल	पंचेष्टी मय

३३ औदारिकसाययोगमे-

२ गति	नियच, मनुष्य
५ इन्द्रिय	मत्र
६ काय	मत्र
१ योग	औदारिक
३ चेद	मत्र
२५ कपाय	मत्र
८ ज्ञान	मत्र
७ समयम	मत्र
४ दर्शन	मत्र
११ लेश्या	मत्र
२ भव्य	भव्य, अभय
६ सम्यक्त्व	मत्र

०	सैनी	मना, अमैनी
१	आहारक	आहार
१३	गुणस्थान	अथाग विना
२०	जीवसमास	मर
६	पयाप्ति	मर
१०	प्राण	मर
४	सजा	मर
१२	उपयोग	मर
१५	ध्यान	युपरतत्रियानिरुत्ति विना
४३	आम्रव	मि० अ१२ ३२५ यो १
७	लक्ष जानि	नियच, मनुष्य
१४८	लक्षकादि	कुल नियच,

३८ जादारिकुमिश्रकाययोगमे-

२	गति	नियंच, मनुय्य
७	इन्द्रिय	सब
६	काय	मर
१	योग	स्व (जादारिक मिश्र)
३	वेद	सब
२५	कषाय	मर
६	ज्ञान	विभाग, मन पयय विना
७	सयम	असयम, यकापात
४	दर्शन	सब
६	लेख्या	द्रवकापीत, भार ६ ।
७	भन्य	भय, अभय
४	सम्पत्त्व	उपशम, मिश्र विना

२४ स्थान

३०

- १ मैत्री मैत्री, अनैरी
- २ आहारक अहारक, (क्याट स
द्वारा अपक्ष) अनैरी ।
- ३ गुणस्थान शिखर १३
- ४ जयसमाप्त स
- ५ पर्याप्ति ज
- ६ प्राण स्व. इन भाग १३ ।

२	गति	दर, नाटक
१	इन्द्रिय	पञ्चेंद्रा
१	काय	श्रम
१	योग	स्व (रत्रियर)
३	वेद	मत्र
२५	रुपाय	मत्र
६	ज्ञान	सुनान ३, कुशान ३
१	सयम	असयम
३	दर्शन	कंरन् रिना
६	लेदया	सत्र
२	भज्य	भत्र्य, अभय ।
६	सम्पत्त्व	सत्र

१	सैनी	सैना
१	आहारक	आहारक
४	गुणस्थान	१।२।३।४
१	जीवसमास	पंचेत्री
६	पर्याप्ति	सत्र
१०	प्राण	मत्र
४	सजा	सत्र
०	उपयोग	मान ६, दर्शन ३
१०	ध्यान	अति ४, शैष्ट ४, घन २ ।
४३	आम्रव	मि० अ १२, कर ५ यो १
८	लक्षजाति	देव नक्षत्री
८१	ल०को०कुल	" "

४२ वैकियरुमिश्रकाययोगमे

१ गनि	दर, नहर
१ इट्टिय	पचेटी
१ काय	ग्रस
१ योग	वैकियरुमि २
३ वेद	सर
२५ पायाय	मर
५ ज्ञान	सुनान आदिपे ३, कुज्ञा
१ सयम	असयम [आदिपे २]
३ दर्शन	चनु, अचनु, अररि
४ लेइया	इव्यमापोत, भार ६।
२ मव्य	मव्य, अमव्य
५ सम्पक्त्व	मिश्र विना

- १ सैनी सैनी
- २ आहारक अहारक
- ३ गुणस्थान १।२।४
- ४ जीयसमास पंचेत्री
- ५ पर्याप्ति सत्र
- ७ प्राण मन, वच, श्राम विना ।
- ४ सजा मर्ष
- ८ उपयोग ज्ञान ५, दर्श ३ ।
- ९ ध्यान ज्ञान ४, राट ४, ध्यं १
- १३ आत्मय मि ५ अ १२५ ५५ दे. १
- ८ लक्षजानि दय, नारद
- ५१ ल को कुल,, "

१४ आहारक वा मिश्र कृष्ययोगम्

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्र
१	काय	राम
१	योग	स्वस्वयाग
१	वेद	पुराण
११	कृषाय	संय ४, हास्य ६, वेद १
३	ज्ञान	मनि, धुनि, अरवि ।
२	सयम	सामयिक, हृदयस्था
३	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अरवि ।
३	लक्ष्या	पात, पञ्च, शुरु ।
१	भक्ष्य	भय
२	सम्पत्त्व-	क्षयिक, वेदक ।

- १ सैनी मैनी
- १ आहारक ब्रह्मक
- १ गुणस्थान प्रनव
- १ जीरसमास मैनी पर्वेशी
- ३ पर्याप्ति सव
- १०३ प्राण भस्मीय
- २ सजा सर्व
- ६ उपपाग मुगान ३ दानि ३
- ७ ध्यान अर्त ३, धर्म ३
- १२ आद्यर कप ११येण १ ल म
- १४ लक्षजानि म्लुय
- १४ ल०को० कुल

४	गति	मय
५	इन्द्रिय	सय
६	काय	मय
१	योग	न्य [कामाण योग]
३	वेद	सय
२५	रूपाय	सय
६	ज्ञान	कुअरवि, मा दर्ययविना
२	सयम	असयम, यपायान
४	दर्शन	सय
१	लेख्या	द्रयगुन, मार ६
२	भव्य	भ्य, अमय
५	सम्यक्त्व	मिश्र विना

- | | | |
|------|---------------|----------------------|
| २ | भैरी | ती, नमैरी |
| १ | आहारक | जगद्गुरु, |
| ४ | गुणम्यान | १।२।४।२३ |
| १० | जीवसमास | मर |
| ० | पर्याप्ति | ० |
| ७ | प्राण | मन, चेत, स्थान, विना |
| ४ | सद्भा | मर |
| १० | उपयोग | ज्ञान ६, दर्शन ४। |
| १६ | स्थान | जा ४, गैड ४ पर गु? |
| ४३ | आम्रर | वि ७ ११३क ३३यो १ |
| ८४ | लक्षजानि | मर |
| १००॥ | ल को कृष्ण-मर | |

३	गति	देव, मनुष्य, निधन
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्र
१	काय	रम
१३	योग	आरागक द्विक विना
१	वेद	स्त्रीवेद
१३	कषाय	पुरुष, नपुंसक विना
६	ज्ञान	सुज्ञान३, दुज्ञान३
४	सजम	अ दे सामा डेदोप
३	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अरवि
६	लेश्या	सर
२	भव्य	भव्य, अभव्य
६	सम्यक्त्व	सर

- | | | |
|-----|-----------|--|
| २ | सैनी | सनी, अमैनी |
| २ | आहारक | आहारक, अग्रहारक |
| २ | गुणस्थान | आदि |
| २ | जीवसमास | सैनीपचेंद्री, अ पचेंद्री |
| ६ | पर्याप्ति | स |
| १० | प्राण | स |
| ४ | सजा | स |
| ९ | उपयोग | ज्ञान ४, दर्शन ३ |
| १३ | ध्यान | अतक ३ विना |
| ५३ | आखव | मि ५ अ १ ग २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० |
| २२ | लक्षजाति | देव, मनुष्य, त्रिवेद |
| ८३॥ | ल को कुल | |

३	गति	त्रे, मनुष्य, त्रिपच
१	इन्द्रिय	पचट्टी
१	काय	त्रय
११	योग	सत्र
१	चद	पुम्प
२३	कषाय	स्त्रा, नपुमक विना
७	ज्ञान	वेनल विना
५	सयम	सूत्रसा० यथा० विना
३	दर्शन	सत्र
६	लेट्या	सत्र
२	भव्य	मय, अमय
६	सम्यक्त्व	सत्र

२	सेना	सना, जसना
२	आहारक	आहार्य, अनाहारक
वीकानेद प्रथम नं० विभाग	गन	आग्नि
	चनास	स पचडा, जम पच
	स	मय
		सय
		मय
	ग	वेगल श २ रिना
१२	ध्यान	अतरे ३ रिना
५०	आस्त्र	छी, नमुमय रिना
२२	लज्जजानि	दर, मनुष्य, निर्दय
८॥	ल०को०कुल	" " "

३	गनि	नरक, पशु, मनुष्य
८	इन्द्रिय	मत्र
६	काय	मत्र
१३	योग	आहार २ विना
१	वेद	नपुसक
१३	कपाय	स्त्रा, पुरुष २ विना
१	ज्ञान	मन पयय, केव २ विना
४	सयम	अ, ते, समा, उदोप
३	दर्शन	काल विना
६	लेडया	सत्र
२	भव्य	मत्र, अभय ।
६	सम्यक्त्व	सत्र

२	सैनी	मना, असैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
०	गुणम्यान	आत्मिक
१०	जीवसमास	सत्र
६	पयाप्ति	सत्र
१०	प्राण	सत्र
४	सशा	मत्र
०	उपयोग	ज्ञान ६, ग्नान ३
१३	ध्यान	अतके ३ गिना
५३	आम्रव	आहारक द्वि, सत्रावेद, पुरुष-वेद गिना ।
८०	लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य

१७१॥ लक्षकोटि कुल ॥ " " "

५४ अनन्यानुयन्धिचतुष्टयमे-

४ गति	मत्र
५ इन्द्रिय	सत्र
६ काय	मत्र
१३ योग	आहारक २ गिना
३ वेद	मत्र (कपाय १)
१० कपाय	हाम्यादि ९, म्र ३
३ ज्ञान	कुमान ३
१ सयम	असयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
१ लेश्या	सत्र
२ भव्य	भव्य, अभव्य
२ सम्यक्त्व	मिथ्यत्र, सामान

- | | | |
|-----|-------------|---|
| २ | सैनी | भनी, जमनी |
| २ | आहारक | आहार, अनाहार |
| २ | गुणस्थान | निष्ठा ३, सामान्य |
| १० | जीविसमास | सत्र |
| ६ | पर्याप्ति | सत्र |
| १० | प्राण | सत्र |
| ४ | सजा | सत्र |
| ५ | उपयोग | बुद्धान ३, दृष्टि ३ |
| ८ | न्याय | अर्थ ६, नैति ६ |
| ४० | आमय | वि. ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १०० |
| ८० | लक्षजानि | सत्र |
| १०० | ल सो कुलम्ब | |

४	गति	सत्र
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्र
१	काय	त्रय
१३	योग	आह्वयक२ विना
६	पेद	सत्र (कायप१)
१०	गवाय	दास्यादि ०, ह्यस्य-
३	ज्ञान	मति, श्रुति, अरधि ।
१	सपम	असपम
१	दर्शन	केवल विना
६	लंछया	सत्र
२	मव्य	मय, जमव्य
४	सम्पत्स्व	मिथ्र, उपशम, क्षायिक, १

१	सैनी	गैनी
२	आहारक	आहारक, अनाहारक
२	गुणस्थान	२१२
१	जीवसमास	मना पचैरी
६	पर्याप्ति	सत्र
१०	प्राण	सत्र
४	सजा	सत्र
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
१०	न्याय	अ० ४, गै० ४, धर्म ०२
३५	आम्र	अ १२ क १० योग १३
२६	लक्षजाति	ते ४, ना ४, प ४, म १४
१०८॥	लक्षकोटिकूल	दर, ना, पशु, मनु

२	गति	मनुष्य, पशु
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्री
१	काय	रस
०	योग	मन ४, रचन ४, औ १
३	वेद	मन
१०	रूपाय	हास्यादि ९, स्वर १
३	ज्ञान	मति, श्रुति, अगति ।
१	सयम	सयमामयम ।
३	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अगति
३	लेश्या	पान, पक्ष, शुद्ध ।
२	भव्य	भय,
३	सम्पत्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक ।

- | | | |
|----|-----------|-------------------|
| १ | सैनी | सनी |
| १ | आहारक | आहारक |
| १ | गुणस्थान | दगात्र |
| १ | जीवसमास | सनी पचेंडी |
| ६ | पर्याप्ति | मय |
| १० | प्राण | मय |
| ४ | सजा | मय |
| ६ | उपयोग | ज्ञान ३, दान ३ |
| ११ | स्थान | जा ४, री ४ धर्म ३ |
| १० | जाम्बव | अ ११ क १० यो ९ |
| १८ | लक्षजाति | मनुष्य, पशु |
| १४ | ल०को० कुल | " " |

८७ स्थान ।

३३

- | | | |
|----|-----------|-----------------------|
| ३ | सम्पत्त्व | अपमान, क्षयिक, शून्य |
| १ | सैनी | मना |
| १ | आहारक | जागरण |
| ४ | गुणस्थान | ८ म १० त्व |
| १ | जीवसमास | पञ्चमी |
| ६ | पर्याप्ति | मय |
| १० | प्राण | मय |
| ४ | सजा | मय |
| ७ | उपयोग | वान ४, शर्श ३ |
| ८ | ध्यान | अर्नि ३, धर्म ४, गु १ |
| २१ | आम्रय | योग ११, वयाप १० |
| १२ | लक्षजाति | मनुष्य |
| १४ | ल को कुल | ॥ |

४	गति	सत्र
५	इन्द्रिय	सत्र
६	काय	सत्र
१५	योग	सत्र
३	वेद	सत्र (हास्यादि स्त्र ?
२०	कपाय	क्रोधादि १६, वेद ३ विना
७	ज्ञान	केवल विना
५	सयम	सूत्र, यथास्थान-
३	दर्शन	केवल विना
६	लेट्या	मत्र
२	भव्य	मय, अमव्य
५	सम्पत्त्व	सत्र

२ सैनी	सैनी, अमैनी
२ आहारक	जाहारक, अनाहारक
८ गुणस्थान	आठ पयत
१९ जीवसमास	म४
६ पर्याप्ति	स३
१० प्राण	स३
४ सजा	स३
१० उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३ ।
१३ ध्यान	आ ४, मै ४, घ ४, शु १,
५२ आस्रव	मि ५ अ १२ व २० यो १५
८४ लक्षजाति	स३
१९॥ ल को कुल	॥

नोट—ये कथ्य के २४ स्थान
इसमिये यहा द्वारा नहीं शिख ।

४	गति	सत्र
५	इष्टिय	सत्र
६	काय	सत्र
१३	योग	आहार्य २ मिता
३	धेद	सत्र
१५	कषाय	सत्र
१	ज्ञान	ग ल
१	सधम	अमयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेठ्या	सत्र
२	मज्य	भय, अभय
२	सम्यक्त्व	मिथ्यत्र, सामादन

२४ स्यान् ।

६७

- | | | |
|------|-----------|--------------------|
| १ | सैति | मैना, असेना |
| ७ | आहारक | आहारक, अनाहारक |
| ७ | गुणस्थान | मिग्यान्, नासाग्न |
| १० | जीवसमास | सम् |
| ३ | पमाप्ति | सम् |
| १० | प्राण | मय |
| ४ | सजा | मय |
| ३ | उपयोग | वान् खम्ब १, दशन २ |
| ८ | ध्यान | आन ४, रोट ४ |
| ५५ | आत्मव | आहारक ७ रिना |
| ८४ | लक्ष जाति | सम् |
| १००॥ | लक्षकोटि | कुल ॥ |

४	गति	मय
१	इन्द्रिय	पञ्चेशी
१	काय	त्रय
१०	योग	म ४, व ४, ओ १, वै १
३	वेद	सब
२५	कषाय	मय
१	ज्ञान	कुअगति ।
१	सधम	अमयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेउया	सब
२	भन्य	भव्य, अभव्य
२	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन

- १ सैनी सेना
 १ आहारक आहार
 २ गुणस्थान विष्यान्व, मामादन
 १ जीरसमास मना पञ्चद्री
 ६ पर्याप्ति मत्र
 १० प्राण सत्र
 ४ सज्ञा मत्र
 ३ उपयोग ज्ञान १, दर्शन २
 ८ ध्यान आ० ४, टी० ४
 २ आस्रय मि ५, ज १३ क २५, योग १०
 २६ लक्षजानि पञ्चद्री सब
 १०८॥ लक्षकौटिकुल " "

७० मति-श्रुतिज्ञानमे-

४	गति	सर
१	इन्द्रिय	पचेंद्र
१	काय	प्रस
१५	योग	सर
३	वेद	सर
२१	रूपाय	अनतानुगधी ४ रिना
१	ज्ञान	स्व (मति, श्रुति)
७	सयम	सर
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेठया	मय
१	भन्य	भय
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

४	गति	मय
१	इन्द्रिय	पञ्चैत्री
१	काय	रम
१५	योग	सय
३	वेद	सय
२१	कपाय	अनतानुरधी ४ विना
१	ज्ञान	अवधिज्ञान
७	सयम	सय
३	दर्शन	कनल विना
६	लेट्या	सय
२	भन्य	भय

३ सम्यक्त्व उपशम, क्षायिक, वेदक ।

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्र
१	साध	ब्रह्म
■	योग	म४, २४, औदा १
१	वेद	पुरुष
११	कपाय	स४ ४, हास्या ६, पुर १
१	ज्ञान	मा पर्यय
४	सयम	सा ३ मू यथा
३	दर्शन	वेदल विना
३	हेतुया	पीत, पद्म, गुरु
२	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्य	उपगम, वेदक, क्षायिक

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चद्री
१ काय	त्रय
७ योग	म २, उ २, औदा २ आदा १
० वेद	०
० कषाय	०
१ ज्ञान	वेदज्ञान
१ सयम	यथास्थान
१ दर्शन	वेदज्ञान
१ लेख्य	शुद्ध
१ मन्य	मन्य
१ सम्पत्त्व	क्षायिक

■ सैनी	०
० आहारक	आहारक, अनाहारक
२ गुणस्मान	सयोग, अयोग
१ जीवसमास	सैनी पंचेद्री
३ पर्याप्ति	सय
४ प्राण	मन वच स्वास आपु
■ सजा	०
२ उपयोग	के आ १, के द १
२ ध्यान	अतरे शुरु २
७ आम्रव	योग
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल०को० कुल	"

७८ सामायिक-छंदोपस्थासंभ-

१	गति	मनुष्य
१	उद्विध	पचद्रा
१	काय	श्रम
११	योग	म ४, व ४, वा १ जाहा २
१	वेद	मय
११	रूपाय	मग्न ४, हाम्या ०
४	ज्ञान	भेदाज्ञान विना
१	सयम	स्वस (ममा छंदोप)
१	दर्शन	वेद विना
१	लेख्या	पीत, पत्र, शुष्क
१	भन्य	मय
१	सम्यक्त्व	उपान, वेदक, नायिक

१	सैनी	सना,
१	आहारक	आहारक
४	गुणम्यान	६।७।८।९
१	जीवसमाप्त	सि पचत्री
६	पर्याप्ति	सत्र
१०	प्राण	सत्र
४	सजा	सत्र
७	उपयोग	शा ४ दर्शन ३
८	ध्यान	आ ३ व ४ दृष्ट १
२४	त्रालव	२ १३, योग ११
१८	लक्षजानि	मनुष्य
१४	ल०को०कुल	"

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्र
१	काय	ग्राम
९	योग	म १, य १, आ १
१	वेद	पुराण
११	कषाय	संज्ञ ४ हास्यादि ६, पुराण १
१	ज्ञान	मयादि
१	सयम	परिहारविशुद्धि
३	दर्शन	केवल त्रिना
३	लेइया	पीत, पद्म, शुक्ल ।
१	मन्य	मन्य
२	सम्पत्त्य-	क्षायिक, वेदक

१	सैनी	मैनी
१	आहारक	आहार्य
२	गुणस्थान	प्रमत्त, अप्रमत्त
१	जीयसमास	सैनी पञ्चैत्री
६	पर्याप्ति	सय
१०	प्राण	सय
४	सजा	सय
६	उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
७	ध्यान	आन ३, धन ८
१०	आस्रव	व० ११, योग ९
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल को कुर	,,

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्र
१ काय	ग्रस
० योग	म४, व४, आदा १
० वेद	०
१ कपाय	संयत्न लेभ
४ ज्ञान	वेदज्ञान विना
१ सधम	सूक्ष्मसापराध
३ दर्शन	केवलद विना
१ लक्षणा	शुद्ध
१ भव्य	भव्य
२ सम्पत्त्व	उपशम, क्षाधिक

१	सैनी	सर्ग
१	आहारक	आहार
१	गुणम्भान	१० ग
१	जीविसमास	मैनी, पचेंडी
६	पर्याप्ति	सत्र
१०	प्राण	सत्र
१	सजा	परिग्रह
८	उपयोग	ज्ञान ४, दान ३
१	ध्यान	प्रथम गुरु
१०	आम्रव	संयत्न क १ याग ०
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल को कुल	॥

८४ यथाग्यातसयममे-

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेंद्रा
१	काय	रम
११	योग	म ४, र ४, आ २ का १
०	चंद	०
०	रूपाय	०
५	ज्ञान	मत्पादि यथायोग्य
१	सयम	यथाग्यान
४	दर्शन	सब
१	लेश्या	शुक्ल
१	भव्य	मन्य
२	सम्यक्त्य	उपशम, क्षायिक

- | | | |
|----|-----------|------------------|
| १ | सैनी | सैनी |
| २ | आहारक | आहारक, अनाहारक |
| ४ | गुणस्थान | ११।१२।३।१४ |
| १ | जीवसमास | सनी पंचेडा |
| ६ | पर्याप्ति | सत्र |
| १० | प्राण | मय |
| ० | सज्ञा | ० |
| ९ | उपयोग | ज्ञान ५, स्थान ४ |
| ४ | ध्यान | शु ४ |
| ११ | आम्रय | योग ११ |
| १४ | लक्षजाति | मनुष्य |
| १४ | ल०को० कुल | " |

२	गानि	पशु, मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१	राघ	ऋस
९	योग	म ४, र ४, औ १
३	वेद	मव
१७	कषाय	प्रत्या ४, म ४, हा ९
३	ज्ञान	मनि, श्रुति, अरवि
८	सयम	सयमासयम
३	दर्शन	केवलद विना
३	लैङ्ग्या	पात, पद्म, शुङ्ग
१	भल्य	भल्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदन, क्षायिक

२७ ध्यान

१ सैनी	मैनी
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	देशव्रत
१ जीवसमाप्त	सैनी पर्वती
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ सजा	सब
६ उपयोग	सब ३ स्थान ३
११ ध्यान	ब० १, २, ३, ४
३७ आनन्द	ब० १, २, ३, ४, ५, ६
१८ लक्षणानि	ब० १, २, ३, ४, ५, ६

४ गति	मत्र
५ इन्द्रिय	सत्र
६ काय	सत्र
१३ योग	आहारक २ गिना
३ वेद	सत्र
२५ रूपाय	सत्र
६ ज्ञान	बुझान ३, सुझान ३
१ सयम	असयम
३ दर्शन	केवलदर्शन गिना
६ लेख्या	सत्र
२ भव्य	भव्य, अभय
२ सम्यक्त्व	सत्र

- १ संन्यास - २
३ आहार - ४
५ गुणव्यय - ६
७ जीरसनद्वय - ८
९ पचानि - १०
१० प्राण - ११
११ सञ्ज्ञा - १२
१२ उपश्रय - १३
१३ ध्यान - १४, १५, १६, १७
१४ आधर - १५, १६, १७
१५ लक्ष गति - १६

१०

चक्षुदशनमे-

॥ गति	मय
२ इन्द्रिय	चाक्षुः, पञ्चेंद्रिय
१ काय	ग्रस
१० योग	सर्ग
३ वेद	मय
२५ कषाय	सय
७ ज्ञान	नेत्रलक्षण विना
७ सयम	सय
१ दर्शन	चक्षुदशन
६ लेश्या	सय
२ भव्य	भव्य, अभव्य
६ सम्यक्त्व	सय

२ सैनी	सैनी, अमैनी
३ आहारक	आहारक, अन्नाहारक
१२ गुणस्थान	१२ पर्यंत
३ जीवसमास	चौ १, अष्टौ २, पञ्चै ३
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सुख
४ सजा	सुख
८ उपयोग	उत्तम, दम्भ ?
१४ ध्यान	अ२, गै२, व२ शु०
५७ आस्रव	सर्व
२८ लक्ष जाति	चै२, पचे२
११७॥ ल०को० कुल	

४	गति	सत्र
५	इन्द्रिय	सत्र
६	काय	सत्र
१७	योग	सत्र
३	वेद	सत्र
२५	कपाय	सत्र
८	ज्ञान	वेदज्ञान विना
७	सयम	सत्र
१	दर्शन	अचक्षुदर्शन
६	लैङ्ग्या	मत्र
२	भव्य	भय, जमन्य
४	सम्यक्त्व	सत्र

२	सैनी	सैनी, असैनी
२	आहारक	आहारक१, अनाहारक१
१०	गुणरमान	१२ पर्यन्त
१०	जीवसमास	सत्र
६	पर्याप्ति	सत्र
१०	प्राण	सत्र
६	सज्जा	सत्र
८	उपयोग	ज्ञान ७ दर्शन १
१४	ध्यान	आ ४ ध ४ शुद्ध २ ध ४
८७	आसन्न	सत्र
८४	लक्षजाति	सत्र
१९९॥	ल०को०कुल	॥

अग्रधिदर्शनम्-

१४

४ गति	सत्र
१ इन्द्रिय	पञ्चैकी
१ काय	त्रस
१५ योग	सत्र
३ वेद	सत्र
२१ कृपाय	अनन्ता ४ त्रिना
४ ज्ञान	सुभान
७ सयम	सत्र
१ दर्शन	अग्रि दर्श
६ लेख्या	सत्र
१ भव्य	भव्य
३ सम्पत्त्व	क्षामिन्, उपशम, वेदक

- १ सैनी सनी,
 २ आहारक आहारक, अनाहारक
 ० गुणस्थान ४ से १२ तक
 १ जीरसमास सनी, पचेश
 ६ पर्याप्ति मय
 १० प्राण सय
 ८ सज्ञा सय
 ५ उपयोग ज्ञा ४, दान १ ।
 १० ध्यान अतः २, शुद्ध विना
 ४८ आश्रय मिथ, क४, अ विना
 २६ लक्षजाति मनु दे ति (से ५)
 ०८॥ ल को कुल ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

०८ कृष्ण, नील, कापोत लेइयामे-

३ गति	देव विना (पयास अपेक्षा)
५ इन्द्रिय	मय
६ काय	सा
११ यांग	आत्मक २ विना
३ वेद	मय
२६ कषाय	"
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१ सयम	असयम
३ दर्शन	केन्द्र विना
१ लेइया	नव (कृष्ण, नील, कापो)
२ भव्य	भव्य, अभव्य
६ सम्पत्त्य	सय

૧	સૈની	સર્ની, અસના
૨	આહારક	આહારક, અનાહારક
૩	ગુણસ્થાન	૧।૨।૩।૪
૧૦	જીવસમાસ	સત્ર
૬	પર્યાપ્તિ	સત્ર
૧૦	પ્રાણ	સત્ર
૪	સજ્ઞા	સત્ર
■	ઉપયોગ	નામ ૬, ર્થનિ ૩
૧૦	ધ્યાન	અર્થ ૪, રીતિ ૪, ધર્મ ૨
૯૯	આસ્રવ	આહારક ૨ ત્રિના
૯૦	લક્ષજાતિ	દેવ ત્રિના
૧૭૩	લંકોંકુલ	

३	गति	दय, मनुष्य, पशु
१	इन्द्रिय	पञ्चेंद्रो
१	काय	रम
१५	योग	मय
३	वेद	"
२७	कषाय	"
८	ज्ञान	अगल विना
८	सयम	गृहमर्मा, यथाप्यन्त विना
३	दर्शन	कार विना
१	लेख्या	ख (गीत, पद्म)
२	भज्य	भज्य, अभज्य
		मय

- २।१ सनी पतिमें सनी, जमेना
दोना, पद्ममें स १
- २ आहारक आहारक, अनाहारक
- ७ गुणस्थान ७ पर्यंत
- २।१ जीवसमास पानमें से अ नो पद्ममें से १
- ६ पर्याप्ति सत्र
- १० प्राण सत्र
- ४ सज्ञा सत्र
- १० उपयोग धान ७, दशन ३
- १२ न्याय जा० ४, रा० ४, धर्म ४
- ५७ आस्रव सत्र
- २२ लक्षजाति देव, पशु, मनुष्य
- ८१॥ लक्षकोटिकुल " " "

३ गानि	दे म प
१ इन्द्रिय	पचेंद्रा
१ काय	ग्रह
१५ योग	मन्त्र
३ घेद	सन्त्र
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ सयम	सन्त्र
४ दर्शन	सन्त्र
१ लक्ष्या	शुक्र
२ भव्य	मन्त्र, अभव्य
६ सम्यक्त्व	सन्त्र

१ सैनी सनी

२ आहारक आहारक, अनाहारक

१३ गुणस्थान १३ पयन

१ जीवसमास मैनी पर्वेदी

६ पर्याप्ति सर

१० प्राण सर

४ सजा मर

१२ उपयोग मर

१५ ध्यान अतमा शुद्ध १ निना

५७ आस्र सर

२२ लक्षजाति दे म पशु

८३॥ ल०को० कुल दे म पशु

४	गति	मत्र
५	इष्टिय	मत्र
६	काय	मत्र
१५	योग	मत्र
३	वैद	मत्र
२१	कपाय	मत्र
८	ज्ञान	मत्र
७	सयम	मत्र
४	दर्शन	मत्र
६	लैश्या	मत्र
१	मव्य	मव्य
६	सम्पत्त्य	मत्र

२ सैनी	मय
२ आहारक	॥
१४ गुणस्थान	॥
१० जीवसमास	॥
६ पर्याप्ति	॥
१० प्राण	॥
४ सजा	॥
१२ उपयोग	॥
१६ ध्यान	॥
५७ आम्ब	॥
८४ लक्षजाति	॥

१००॥ लक्ष्मी कल ॥ ॥

८ गति	सत्र
५ इन्द्रिय	"
६ काय	"
१३ योग	आहारक २ विना
३ घेद	सत्र
२५ कषाय	"
३ ज्ञान	बुधान ३
१ सयम	असयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
२ लेह्या	सत्र
१ भव्य	अभय
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व

२४ स्थान ।

३५

- | | | |
|-----|------------|--------------------|
| २ | सैनी | सत्र |
| ७ | आहारक | सत्र |
| १ | गुणस्थान | मिथ्यात्व |
| १९ | जीवसमास | सत्र |
| ६ | पर्याप्ति | सत्र |
| १० | प्राण | मत्र |
| ४ | सजा | सत्र |
| ५ | उपयोग | कुत्रान २, तर्जन ३ |
| ८ | भ्यान | अर्ति ४, रीट ४ |
| ५५ | आस्त्र | आहार्य २ निम्न |
| ८४ | लक्षजाति | सत्र |
| १०० | ॥ ल को कुल | सत्र |

१०८ मिथ्यात्व सम्प्रत्ययमे-

४ गति	सत्र
५ इन्द्रिय	सत्र
६ काय	सत्र
१३ योग	आहार २ विना
३ वेद	सत्र
२५ रूपाय	सत्र
३ ज्ञान	कुतान
१ सयम	असयम
२ दर्शन	चतु, अचतु
६ लेश्या	मत्र
२ मव्य	मव्य, अमव्य
१ सम्प्रत्यय	मिथ्यात्व

० सैनी	सैनी, अमैनी
० आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणम्यान	निध्यात्य
१० जीवसमाप्त	मय
२ पर्याति	सय
१० प्राण	मय
सजा	सय
५ उप दोग	वान ३, दर्शन २
८ दधान	जार्न ४, गैद ४,
५५ आस्रय	आहारक २ विना
८४ लक्ष जानि	सय
१२९॥ ल०को० कुल	॥

११० सासदन सम्यक्त्वमे-

४	गति	सत्र
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्र
१	काय	त्रय
१३	योग	आहारक २ विना
३	वेद	सत्र
२५	कपाय	७
३	ज्ञान	बुझान
१	सयम	असयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेठ्या	सत्र
१	भव्य	भव्य
१	सम्यक्त्व	सासात्न

- | | | |
|------|-----------|-------------------------|
| १ | सैनी | सनी, |
| २ | आहारक | आहारक, अनाहारक |
| १ | गुणस्थान | सानादन |
| १ | जीरसमास | मैनी, पचेंडी |
| ६ | पर्याप्ति | सत्र |
| १० | प्राण | मत्र |
| ४ | सजा | सत्र |
| ५ | उपयोग | ज्ञान ३, दर्शन २ । |
| ८ | ध्यान | जार्न ४, रौद्र ४ |
| ५० | आम्रय | मिथ्या ५, जार्ति २ रिना |
| २६ | लक्षजाति | मनु देव नास्वी पशु |
| १०८॥ | ल को कुल | ॥ ॥ ॥ ॥ पर्ये |

४	गति	सत्र
१	इन्द्रिय	पञ्चेंद्रि
१	काय	रम
१०	योग	म ४, र ४, औ १ र १
३	घेद	सत्र
२१	रूपाय	अनतानुरधी ४ रिना
३	ज्ञान	मिश्रज्ञान
१	सयम	असयम
३	दर्शन	केवल रिना
६	लेख्या	सत्र
१	भव्य	मय
१	सम्यक्त्व	मिश्रमम्यक्त्व

१	सैनी	सैना,
१	आहारक	जाटक
१	गुणभान	निग्र
१	जायसमास	मना, पर्वरी
६	पर्याप्ति	सत्र

१० प्राण मव

८ संज्ञा सत्र

६ उपयोग निश्चान ३, दर्शन ३

० भ्यान आर्त्त ४, राट्ट ४, घन १

४३ आस्त्रव ५ १२, ३२१, यो १०

२८ लक्षजानि न्नु दण नाम्की पणु

१०८॥ ल को कुल " " " "

११४ उपशम सम्यक्त्वम्-

४	गति	सत्र	
१	इन्द्रिय	पचडी	
१	काय	नस	[१ विना
१२	योग	आहारक २ औदा मि	
३	वेद	सत्र	
२१	कषाय	अनतानुरी	विना [अ
४	ज्ञान	मत्यादि ४	[द्वितीयोप
६	सयम	परिहारविशुद्धि	विना
३	दर्शन	केवलदर्शन	विना
६	लेश्या	सत्र	
१	भण्य	मय	
१	सम्यक्त्व	उपशमसम्यक्त्व	

१	सैनी	सैना
२	आहारक	आहारक, अनारक
८	गुणस्थान	चौदमे ११ पयन
७	जीवसमाप्त	मनी पचेंडी
६	पर्याप्ति	सय
१०	प्राण	सय
४	सजा	सय
७	उपयोग	४ गान, ३ दशन
१२	ध्यान	आ२ गु११ रा४ ध४
२५	आम्रव	अ१२, क२१, यो१२
२६	लक्षजाति	दे म पशु ना
१०८॥	ल० मो० कुल	दे म पशु ना

७७४ त्रयोपशम सम्पत्त्यम्-

४	गानि	गर
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्रा
२	क्राय	त्रय
१५	योग	सत्र
३	वेद	"
२१	कषाय	"
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
७	सत्यम्	सुष्ठु यथा विना
१	दर्शन	केवलदर्शन विना
६	लेश्या	सत्र
१	भव्य	भय
२	सम्पत्त्य	त्रयोपशम

१	सैनी	सेना
२	आहारक	आहारक जनक
४	गुणहरान	गुणहरान
१	जीवसमास	पञ्चमी
६	पर्याप्ति	सब
१०	प्राण	सब
४	सजा	सब
२	उपयोग	गान ४, गान २
१२	ध्यान	आर्ति २, रात्रि २, धन ४ बुद्ध
४८	आश्रय	अ१२ अ२१ या १५
२६	लक्षजानि	म २ ना पन
१०८॥	ए को कुल म २ ना	

११८ क्षायिकसम्पत्त्वमे-

४	गति	मग
१	इन्द्रिय	पचेंडी
१	काय	प्रस
१५	योग	सब
३	वेद	"
२१	कपाय	अननानुरी बिना
५	ज्ञान	३ कुज्ञान बिना
७	सयम	सग
४	दर्शन	"
६	लेठ्या	"
१	भल्य	मल्य
१	सम्पत्त्व	क्षायिक

१ सैनी	सैनी
२ आहारक	आहारक, जनहारक
११ गुणस्थान	६।१४ पवन
१ जीवसमास	मैत्र पञ्चदश
३ पर्याप्ति	सत्र
१० प्राण	सत्र
४ सजा	सत्र
■ उपयोग	सुत्रान ५, दशन ४
१६ ध्यान	मत्र
४८ आत्मत्र	अ१२ क२१ योग ५
२६ लक्ष जाति	दे न ना प पशु
६१०८॥ ल०क्र० कुल	॥ ॥ ॥

॥ गति	सत्र
१ इन्द्रिय	पञ्चमी
१ कृष	त्रस
१५ योग	सत्र
३ वेद	मत्र
२१ कृषाय	सत्र
७ ज्ञान	वेमलज्ञान विना
७ सत्रम	सत्र
३ दर्शन	केवलदर्शन विना
६ लेश्या	सत्र
२ भव्य	भव्य, अभव्य
६ सम्यक्त्व	सत्र

- १ सैनी ३१
 २ आहारक अहारक, अनारक
 १२ गुणस्थान १३ यदं
 १ जीवसमास सनी पर्वश
 ६ पर्याप्ति मर
 १० प्राण ॥
 ४ सजा ॥
 १० उपयोग गान ७, दर्शन ३
 १४ ध्यान गुरु ३ विना
 ७७ आत्मर मर
 २६ लक्षजाति द म ना प पृ

१०८॥ ल को कुल- ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१ गति	तियच
८ इन्द्रिय	सग
६ काय	मा
४ योग	औ २, का१, अनु वच १
३ वेद	सग
२५ कपाय	,,
० ज्ञान	कुमनि, कुशुति
१ सयम	असयम
० दर्शन	चक्षु, अचक्षु
४ लक्ष्या	कृष्ण, नील, कापा, पान
२ भव्य	भव्य, अमत्र्य
१ सम्यक्त्व	मिष्याय सम्यक्त्व

१	सेनी	असैनी
२	आहारक	सब
१	गुणस्थान	विध्याऽ
१८	जीवसमास	सनापचैट्री रिना
५	पर्याप्ति	मन रिना
९	प्राण	" "
४	सजा	सब
४	उपयोग	कुशान२, दर्शन २
८	ध्यान	आ० ४, री० ॥
४६	आस्रव	नि५, अ१७, क२५, यो४
६२	लक्षजानि	असैनी नियंच
२४॥	लक्षकंदिकुल	" "

४ गति	सत्र
७ इन्द्रिय	"
८ काय	"
१४ योग	कामाण विना
३ वेद	सत्र
१५ कपाय	सत्र
८ ज्ञान	सत्र
७ सयम	सा
११ दर्शन	सत्र
६ लेख्या	"
२ भव्य	मय्य, अभय
६ सम्यक्त्व	सत्र

७	से ति	मैत्री, अमैत्री
१	आहारक	आहारक
१२	गुणस्थान	१२ पर्यंत
१९	लिंगसंज्ञास	सप्त
६	परास्मि	"
१०	प्राण	"
४	संज्ञा	"
१२	उपयोग	"
१८	ध्यान	अतका शुद्ध रिता
८६	आश्रय	वामाग रिता
८१	लटा ज्ञानि	सप्त

४ गति	सय
८ इन्द्रिय	"
९ काय	"
१ योग	यार्ना-
३ वेद	सय
२५ कषाय	"
६ ज्ञान	विभाग, नन पयाय विना
२ संयम	असयन, ययायया
४ दर्शन	सय
६ लेश्या	"
२ मव्य	मव्य, अमव्य
५ सम्यक्त्व-	मिथ्र विना

२ सैनी	मैनी, अमैनी
१ आहारक	अनाहारक
५ गुणस्थान	१।२।४।१३।१४
१० जीवसमास	सत्र
६ पर्याप्ति	सत्र
७ प्राण	मन, वचन, धास विना
४ सञ्ज्ञा	सत्र
१० उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ॥
१० ध्यान	आत ४, रौद्र ४, धर्म १ शु?
४३ आस्रव	मि५ अ१२ कर५ या१
८ लक्षजाति	सत्र

१०८ मिथ्यात्व-गुणस्थानम्-

४	गति	सत्
५	इन्द्रिय	"
६	काय	"
१३	योग	आत्मक २ विना
३	वेद	सत्
२५	कषाय	"
३	ज्ञान	सुज्ञान ३
१	सयम	असयम
२	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६	लेङ्गा	सत्
२	भव्य	भय, अभव्य
१	सम्पत्त्व	मिथ्यात्वसम्पत्त्व

-
- ० सैनी भेनी, अमैनी
 २ आहारक आहार्य, अनाहार
 १ गुणस्थान दिव्या ४
 १९ जीवसमास स
 १ पयाप्ति "
 १० प्राण "
 ४ सजा "
 ५ उपयोग बुझान ३, दर्शन २
 ८ घ्यान आ ४, ऐ ४
 ५५ आचर आहमक २ कि
 ८४ लक्ष जानि स
 १९९॥ लक्षकोटि कुल "

१३० सासादन-गुणस्थानमे-

■ गानि	सत्र
१ इन्द्रिय	पञ्चैन्द्रा
१ काय	प्रस राय
१३ योग	आहारक २ विना
३ वेद	सत्र
२५ कपाय	"
१ ज्ञान	कुज्ञान ३
१ सयम	असयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेइया	सत्र
१ भव्य	मव्य
१ सम्पक्त्व	सासादन

- | | | |
|----|-----------|-------------------|
| १ | सैनो | सैनी |
| २ | आहारक | आहार, अनाहार |
| १ | गुणस्थान | तानादन |
| १ | जीवसमास | सैर्ग पंचेद्रा |
| ६ | पर्याप्ति | सत्र |
| १० | प्राण | सत्र |
| ४ | सज्ञा | सत्र |
| ७ | उपयोग | बुत्तल ३, दर्शन २ |
| ८ | ध्यान | आति ४, रीद्र ४ |
| ५० | आश्रय | अ१२ कर५ यो १३ |
| २४ | लक्षजाति | सत्र पंचेद्रा |

१०८॥ ल को कुल ॥ ॥

४ गति	स्र
१ इन्द्रिय	पचेंद्री
१ काय	रम
१० योग	मनः वचः ज्ञा १ वे १
१ वेद	स्र
२१ कषाय	अनतानुग्रहा ४ बिना
१ ज्ञान	सुज्ञान-बुज्ञान मिश्र
१ संप्रम	असंप्रम
२ दर्शन	अपरि, केवल बिना
६ लक्ष्या	मत्र
१ भव्य	भव्य
१ सम्यक्त्व	मिश्रमम्यक्य

१३४ अखिलसम्पत्-गुणस्थानमे-

४	गति	सत्र
१	इष्टिय	पंचेद्री
१	काय	त्रस
१३	योग	आहारक ३ विना
३	वेद	सत्र
३१	रूपाय	अनतानुग-री ४ विना
१	ज्ञान	सुज्ञान ३
१	सयम	असयम
३	दर्शन	केय-विना
६	लेश्या	सत्र
१	भव्य	भय
३	सम्पत्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

१ सैनी	मैनी
२ आहारक	आहार्य, अनाहार्य
१ गुणस्थान	भयिग्नि
१ जीवसमास	सनी पचेंदी
६ पर्याप्ति	सत्र
१० प्राण	सत्र
४ सजा	सत्र
६ उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
१० ध्यान	आ८, टी ४, ध २
४६ आत्मय	अ१२ क२१ याग १३
२६ लक्ष जाति	सत्र पचेंदी

१०८॥ ल० को० कुल " "

१३६ देशव्रत गुणस्थानमे-

२	गति	पशु मनुष्य
१	इन्द्रिय	पचडी
१	काय	त्रस
०	योग	म २, य ४, जी १
३	वेद	सत्र
१७	रूपाय	अन ४ अप्र ४ विना
३	ज्ञान	सुज्ञान ३
१	सयम	सयमासयम
३	दर्शन	केवलदर्शन विना
३	लक्ष्या	पीन पद्म, शुक्ल
१	मव्य	मय
३	सम्पत्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

१३८ प्रमत्त-गुणस्थानमे-

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पञ्चद्री
१	रूय	रस
११	योग	म ४ व ४ ओ१ आहा २
३	वेद	द्रव्यपुरुष, भावभेद ३
१३	कषाय	संरलन ४, हास्या ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
३	सयम	सामा, छेनो, परि
३	दर्शन	केवल विना
३	लेट्या	पीत, पद्म, शुक्र
१	भव्य	भय
३	सम्पत्त्व	उपदाम, वेदक, क्षायिक

- | | | |
|----|-----------|------------------|
| १ | सैनी | सेनी |
| २ | आहारक | आहारक |
| २ | गुणस्थान | प्रमत्त |
| १ | जीयसमास | सैनी पंचेष्टी |
| ६ | पर्याप्ति | स्र |
| १० | प्राण | स्र |
| ४ | सज्ञा | स्र |
| ७ | उपयोग | ४ ज्ञान, ३ दर्शन |
| ७ | ग्यान | आ ३, धर्म ■ |
| २४ | आस्रय | कथाय १३, योग ११ |
| १४ | लक्षजाति | मनुष्य |
| १४ | ल०को० कुल | " |

१३८ प्रमत्त-गुणस्थानमे-

१	गति	मनुष्य
१	इन्द्रिय	पंचेन्द्री
१	काय	ऋत
११	योग	म ४ व ४ औ १ आहा २
३	वेद	द्रव्यपुरुष, भावभेद ३
१३	कषाय	सालन ४, हास्यादि ९
४	ज्ञान	केवलज्ञान विना
३	सयम	सामा, छेनो, परि
३	दर्शन	केवल विना
३	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१	भव्य	भव्य
३	सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	प्रवृत्त
१	जीयसमास	सैनी पंचेद्री
६	पर्याप्ति	मय
१०	प्राण	सव
४	सजा	मय
७	उपयोग	४ धान, ३ दर्शन
७	ध्यान	आ ३, धर्म ५
२४	आस्रय	कथाय १३, योग ११
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल०को० कुल	”

१४० अग्रमत्त-गुणस्यारम-

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्री
१ काय	रस
९ योग	म ४, य ९, औ १
३ वेद	द्रव्यपुष्ट्य, मारभे ३
१३ कपाय	स रग्ग ४, हास्यान्धि
४ ज्ञान	केरलज्ञान विना
३ सयम	सामा उदो परि-
३ दर्शन	केरल विना
३ लेख्या	पीत, पद्य, शुक्ल
१ भव्य	भव्य
३ सम्यक्त्व-	उपशम, नेदक, भाषिक

१४२ अपूर्वकरण-गुणस्थानमे -

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चरी
१ काय	रस
० योग	म ४ य ४ ओ १
३ वेद	द्वय पुरुष, भारवे ३
१३ कषाय	सग्न ४, हास्यादि ९
■ ज्ञान	केरलज्ञान बिना
२ सयम	सामा १ छेदा १
३ दर्शन	केरल बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्य	भव्य
२ सम्पत्त्व	उपशन, क्षायिक

१	सैनी	सैनी
१	आहारक	बाहारक
१	गुणम्यान	अवगम्य
१	जीवसमास	सैनी पंजी
६	पर्याप्ति	स
१०	प्राण	"
३	सज्ञा	वद विना
७	उपयोग	इति १, २, ३
१	ध्यान	प्रकट विचार
२२	आत्मव	क. १, २, ९
१४	लक्षजाति	मक
१४	लक्षकांडिकुल	

१४४ अनिवृत्तिकरण-गुणस्थानमे-

१ गति	मनुष्य
१ उद्दिप	पञ्चेश
१ काय	रम
९ योग	म ४, १ ४ औदा १
३ वेद	द्रव्यपुरुष, भाग्येद ३
७ कपाय	सम्भलन ४, वेद ३
४ ज्ञान	केवलज्ञान विना
२ सयम	सा १, छ १
३ दर्शन	वेबड विना
१ लेश्या	शुक्र
१ भव्य	भव्य
२ सम्यक्त्व	उपशान, क्षायिक

- १ सैनो सैनी,
 २ जाहारक जाहार
 ३ गुणस्थान अनिष्टचिह्नण
 १ जीरसमास मैना, पचेंडी
 ६ पर्याप्ति सय
 १॥ प्राण सय
 २ सजा मनुन, पग्निह
 ७ उपयोग शान ४, दर्शन ३
 १ घदान प्रवक्त्रनिर्गन्धीचार
 १६ आश्रय कपाट ७, योग ९
 १४ लक्षजाति मनुष्य
 १४ ल को कुल ॥

१४६ सूक्ष्मसापराय-गुणरगनमें-

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्च
१ साय	त्रय
० योग	म ४, र ४, आत्मा १
० वेद	०
१ कषाय	मग्न (मूढ) लोभ
० ज्ञान	केवलज्ञान विना
१ सधर्म	मूढनसापराय
३ दर्शन	केवलदर्शन विना
१ लेश्या	शुद्ध
१ भव्य	मय
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक

- १ सैनी सैनी
 १ आहारक आहारक
 १ गुणहान मन्त्रमागय
 १ जीवसमास सैनी पंचेदी
 ६ पर्याप्ति सत्र
 १० प्राण ”
 १ सजा परिग्रह (मुष्मगेभ)
 ७ उपयोग ज्ञान ४, दर्शन ३
 १ ध्यान पृथक्त्ववितर्कगचार
 १० आत्मन कपाय १, योग •
 १४ लक्षजाति मनुष्य
 १४ ल को कुल ”

११८ उपशात्तरूपय-गुणस्थानम्-

१ गानि	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्री
१ काय	रम
९ योग	म ४, र ४, जो १
० धेद	०
० कपाय	०
४ ज्ञान	केवलज्ञान विना
१ सयम	य गायान
३ दर्शन	केवल विना
१ ऐश्या	शुद्ध
१ भव्य	भव्य
२ सम्यक्त्व-	उपशम, क्षायिक

१	सैनी	मेनी
१	आहारक	आहारक
१	गुणस्थान	उपशानकपाय
१	जीवसमास	सनी पचेंडा
६	पर्याप्ति	मय
१०	माण	सय
०	सज्ञा	०
७	उपयोग	४ धान, ३ दर्शन
१	ध्यान	वृथक्करनितर्कगीचा
९	आम्रव	योग ९
१४	लक्षजाति	मनुष्य
१४	ल को कुल	"

१५० क्षीणकृपाय-गुणस्थानमे-

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेंद्रा
१ काय	शरीर
९ योग	म ४ य ४ आं १
० घेद	०
० कपाय	१०
४ ज्ञान	वेदशास्त्र विना
१ सयम	यथास्थान
३ दर्शन	केवलद विना
१ लेश्या	शुद्ध
१ भव्य	भव्य
१ सम्यक्त्व	साधित

१ सैनी सैनी

१ आहारक आहारक

१ गुणम्यान क्षीणरूप

१ जीरसमास सैना पचद्रा

६ पर्याप्ति मय

१० प्राण "

० सजा ०

७ उपयोग शान ४, दर्शन ३

१ ध्यान एक रत्निक अयाचार

९ आश्रय योग ०

१४ लक्षजाति मनुष्य

१४ लक्षकौटिकुल "

१५२ सयोगहवती गुणस्थानमे-

१ गति	ननुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चरी
१ काय	त्रय
७ योग	संयमनयच २, अनुभय २
० वेद	औत्तरिक २, कामाण १
० कपाय	०
१ ज्ञान	वेदज्ञान
१ सयम	यथास्थान
१ दर्शन	केतुदर्शन
१ लेख्या	शुद्ध
१ भव्य	भव्य
१ सम्यक्त्व	क्षायिक

- ० सैनी ०
- २ आहारक बाह्यक, अनाहारक
- १ गुणरुग्ण मयोगवेरु, [भरे
- १ जीवसमास सैना पन्थी [इत्य मन-
- ३ पर्याप्ति मय
- ६ प्राण यच, पाय, घाम, आयु
- ० सजा ०
- ७ उपयोग वेरुग्ण, वेरुग्ण
- १ ध्यान मूत्रत्रियाप्रतिपानि
- ७ आश्व याग ७
- १४ लक्ष जाति मनुष्य
- १४ लक्षमोदि कुल,,

१७४ अयोगकेवली गुणस्थानमे-

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्र
१ काय	रत्न
० योग	०
■ वेद	०
० रूपाय	०
१ ज्ञान	त्रैलोक्यज्ञान
१ सयम	यथास्थान
१ दर्शन	वेददर्शन
० ऐश्या	०
१ मन्य	मन्य
१ सम्यक्त्व	क्षायिक

- ० सैनी ०
- १ आहारक अनाहारक
- १ गुणस्थान अयोग्येयत्री
- १ जीरसमास मनी पचेंदी (द्रव्य-मन अपे
- ६ पर्याप्ति सब
- १ प्राण वायु
- ० सज्ञा ०
- २ उपयोग वैयर्थान, वैयर्थान
- १ ध्यान सुपरतक्रिया निवृत्ति
- ० जाम्बव ०
- १४ लक्षजाति मनुष्य
- १४ ल को कुल ॥

॥ समाप्त ॥



चौबीस-ठाना

घोड़ा ।

देख धर्म-गुरु-अर्चो, रह्यो मम बच काय ।

गुणठगण पर दरिद्रि, रचना कह्यो वराय ॥ १ ॥

रघवगाद एकतस्मिन् ।

गति क्षार, दृष्टी पौंच, काम पद योग पद,

बेद तीन, चौ कणाय, शा आठ मारे ह ।

सयम रात, हग चार, लेइया पठ, मध्य दाय,

सैनी दीय सम्यक छै, दोय द्वा अहारे ह ॥

गुण चौदा, जीव बोदा, प्रभा पद, प्राण दम,

प्रत्यय उपसावन, उपसाग भेद पारे ह ।

ध्यान सौत्रे, सत्ता चार, जाति मग चडरसी,

आध्याटि पुन दाम लगन कोटि पारे ह ॥ २ ॥

चौपाद ।

वहिनेतें चतुल्हा मति तार, पचमने नर पशु विचार ।
 छट्टने चौदम लग बही, मानुस मति इक जानी मही ॥ १ ॥
 इन्नी पाचो है मिथ्यात दूनेतें चौदम ग्या गात ।
 इक पचेन्नी चिनवार कही इस हदिय वर्णार करणहै ॥ ४ ॥
 पहित गुण पटु काय न अर्न, दूनेतें चौदम भूत बस ।
 वहित दून तरह योग लाक ठिन पिन जान निगम ॥ ५ ॥
 ताजेम दग शमि गिन गय मन वग अष्ट भागरिक काय ।
 बघीयक मिल सब दम भये, जागे प्रयोदश वहिने बहे ॥ ६ ॥
 पचमने मन कय कसु जान, नार आसखि भित नव जान ।
 प्रमसने एवादन योग हारक िक दुस जान नियोग ॥ ७ ॥

सप्तमते बारस नव पसवधु नान सुगाग ।
 तेरस जोग मत्त निरधार, अनुमल-गाल्य, वचन मन चार ॥८॥
 भादार्द्रिक आदरिद्र मिध कामोण मित्र सप्त जु विल ।
 चौदिस योग भये सब क्षीण ये नौगमन । तिथि पराणी ॥९॥
 वेद प्रथमते नव लग सोन, भागे वंद न पाल प्रसीन ।
 पद कसायको पर्जन करो गुण ठाण्य भित गिन उचरी ॥१॥

छप्पय ।

पहिले दूजे सबे मिध इक्षीग म्नीच ।
 चौबेद्र इक्ष्मीस नौवटी प्रथम न गेजे ॥
 नत्रस्याख्यानी विना, दध सयमम गतरा ।
 त्रायाख्यानी विना, तेर गद गत वसु हारा ॥

नौवै गुण सर गाछ है, भज्यगा नय वेद मन ।
 दसवै सूछम जेभ दस आगो होल नयाव मन ॥ ११ ॥
 प्रथम नुनिय पुपान, तीन तीजे सु मिथ मन ।
 चोरो तीन गुगल, पावैम भी नमि पान ॥
 पगलै द्वादस लई पान केरन भिन चारो ।
 तेरम-षोडस गुण-स्थान केवत न धारो ॥
 द्दि विधि गुण पर पानको कथन क्यो नगदीगने ।
 अब मयम रान कट, भिमि मूरर भायो पने ॥ १ ॥
 पहिले ते ननु नौ अगमय ही दस जानो ।
 पाम मयम-देश छठ मसम दस जानो ॥

सामारिक लदे पस्थाप, बरिदायिजुई ।

आस-नव गुण दोष, नादि बरिदायिजुई ॥

तापराष-सुष्ठम रंग म्हासमे 'उ मयोम तक ।

दर बगइयात ही जानिरे ने सवन गुलाहर तथिक ॥ १२ ॥

बहिले दूदे दोष, यजु- 'चजु बग १ ।

मयते पारम लदे आगिमुल तान मयोदे ॥

दे बल लर- 'गोद और पद केसा गु 'ग ॥

पंचम-दष्टम-मस्त हीन गुभ 'दया हर अथ ॥

गुनि अगमते मयोम तक एक गुल 'दगा चही ।

गुण बीददे सच नाधिके, पाव त्रिद पदची लही ॥ १४ ॥

पाहिल भव्य-अभय नुनियते भणि चादम ॥

नरगुण ३ गो नाम तटों गदी सम्हतू एक ॥

रुपन पदू सत साहि आय उपम अद वेदक ।

कण्ठों ग्यारस तह दाय ग्यनम और क्षणिक ॥

गन सायिक हा रुई, मैनी-पटैला मियातनै ।

गुण वृत्त चौदस सह इव गैली ही गुणगतन ॥ १५ ॥

सथेयात्तेइसा ।

सहिने दूजे हार-अहारक नाग हारक बोये दाय ।

पचमेंते बारस ग्य हारक तेस हार- १ हारक होय ॥

चादम द्य लशर गाव गुण ला चारद दस ।

पाहेके पाव गुमाण गजल है पाचामें ग्रग आर न काय ॥ १६ ॥

पशोपति चोदम जग पद ही प्राग वारमें जग दण्ड जान ।
 तेरम बच-जन-नाम-अ यु खलु गीरम एक आयु पहिचान ॥
 ताया फटिस्त पट लग गायें तस अष्ट त्रय हार न ठन ।
 चर्म मधुन परिमह दोनों, दसों परिमह भागे हान ॥ १७ ॥

छापय ।

दहि-दूरे दसै दाय पुष्पान तीन है ।
 मिथ माटि त्रय वरा, शान पुनि मिथ दीन है ॥
 पटु पन पद बिगान, तीन गुम रूप बसातो ।
 पदलें दादग लई, तस मनषधन गानो ॥
 तारन चादम दाय है केदर रीत-रन दुत ।

तद वदुद ध्यन बजिन दसै विना सुत अनुसारण ॥ १८ ॥

पढ़िहे-बूजे पढ अस सरक जोइ ।
 मिथ माहि नव पान, धर्मय एक निहैई ॥
 पुनि हरक दुग भद मित्रे, दम वनु गुन ठानो ।
 पषम त्रय कृप मित्रे, दुरुदल गव पढ़िता ॥
 पद अरु प्रय धर्म वरु, सा चर भवेल ना गुल ॥
 पारम तलम पुनि चौदसे, लखे ते दिट गुरुन ॥ १९ ॥
 पढ़िहे पगपन बटे, भएलक प्रिय बिन जाना ।
 पच निधयन नु रिना, न्हिय पषात पलको ॥
 ६ ज मित्र नु नगहि रीग गीग वलानो ।
 अमतागुण मिहि नान चहुम च गीग दह गानो ॥

योग क्ताय तु पूर्ववर, अन्तः-धारह पंचमै ।
 चैवं स योग यथोक्तं प्रमत्त निमित्ते सचमै ॥२॥
 एतन्म अष्टम गुण, —स्वान्न व देव तु आदय ।
 तव मी तो न्ह ज्ये दयम दल ग्य रम मे नव ।
 धारम त तव आन तारम सप्त मनी रे ।
 एत वचनं वुच दयि, आदितेर सुगत तु ई ने ॥
 पारमाण मित्र सप्त य तेरम तु १ मे लानिने ।
 पुनि चौदमेने आसन्न नर्द वद मन वच उर तनिये ॥२१॥

योगि सदा योने प्रथम गुण यने सारे ।
 द्वाये चौ तर्द गल छ चौच विचारी ॥

पचमम नर पगु गग अट्टारह जानो ।
 पदते चौदह तह, मनुष एख चौदह ठनो ॥
 हुलबेगि प्रथममें जान सब दूते चतुल्लग बऊ ।
 पचम नर पगु सबल गन, काये मानुष जान सक ॥२२॥

बोधा ।

ये सब रचना पर तमा यामे दू नदि नीव ।
 तेरा दर्शन ज्ञान गुण तामे ररो सदीष ॥२३॥

७

चीनीस दण्डक ।

गद्य—

दोनों वीर सुधीर— महारथों पर धीर ।
कोसों का हाथ मिलि सही देख सब भी भर ५१०
साक्षात्सव उद्योग के वासनायन दण्डित ।
महाराज धनि रति सुनीति को निवृत्त करीत ५११
मारा । जो विना निवृत्त को ले लाने सख ।
आगे । जो विना निवृत्त को ले लाने सख ।
विभीति सुख विभीति पार लकर विभीति ।
साहस साहस साहस साहस साहस साहस ।
विभीति विभीति विभीति विभीति विभीति ।
दोनों वीर धीर सही विभीति विभीति विभीति ।

साधोतो ईदृष्टला स्यादति मुनयः ।

एतन् निरञ्ज माय धीरं बहुते पानी दत्त ॥१॥

गोप ह—

वदिने दृष्टक गारुड म्या अकल्पने दत्त सत्य मन्वा ।

त्येहिद व्यक्तर मुरनि काम पावर दत्त गदागुलए ॥२॥

सिन्धुना अक नर तिर्यच, पथेदिय आरु पतरच ।

ये चीनखो ईश्वर - ह तत्त मुन दत्तमै भद्र जु - हे ॥३॥

नदसीय मति - ताधनि दत्त तर तिर्यच येच दत्त होय ।

माय अमनी पदिग म्या, मन मित्र हिस करम न पते ॥

एतन् = १ तत्त मति - म्या एत एत मति ।

तत्त माय - म्या एत सही, नाहर पथम मातो ताहे ॥४॥

नारी छुटे सग ही जाय नर अउ मउ माः न थार ।
 ये ता नरदानी सति जाय, जय अकति भागे मगगन् ॥१॥
 नरक साते ॥१॥ च पीन, पनुमान ही नरि दुःखीर ।
 आर नारकी पछु सदाय दा नति पाँ नर दगु जे य ॥१॥
 छुटे य मिता ॥१॥ दुःख, सङ्कट ही दारे निपाय ।
 पदमद्ये मि ॥१॥ मुनि होय सपथ्य केर ॥१॥
 निस तराये निपाय ॥१॥ सीगर हू न य ॥१॥
 य ॥१॥ स्यागल्य भाग निररणी ने मार ॥१॥
 तस देवक दद मिता ॥१॥ नर दगु न नार ।
 नर ॥१॥ नर ॥१॥ नर ॥१॥ नर ॥१॥

॥१॥ नर ॥१॥ नर ॥१॥ नर ॥१॥ नर ॥१॥

वय मर मनि पच लढाय भू जन्, तहार पर, पनु पाय ।
 दुने तुल्य, उपरते देव कायर ह न रहे जिनदेव ॥१६॥
 गहल्लारते ऊँग मरा मरपर ह ने निधय नरा ।
 मर पनु भोगभूमिके दाय दूने मुरा पर नह दाय ॥१७॥
 पाय नही यह निधय नही, देखनि आगभूमि ताह ॥१८॥
 फरसभूमिका नर अरु वार हन बिग भागभूमि नहि और ॥१९॥
 नहि न लान आमाने दाय मति इनछे देखछी दाय ।
 बर्मभूमिका लिग सल भागछत्त फिर चारम लल ॥२०॥
 राहलर ऊपर तियब ताई चो ने परि परल ।
 अन्त सम्यगरा परनाय चारमन उचर चहि पाय ॥२१॥

चौथीम ठाणा

१७१

आ पुसती पचामी लाय भउनत्रिवठे आय न थाप ।

परिवासा वही है ओह पाम वरे पाहे उपजह ॥ १ ॥

परमदेग म मा परमती भावहार ऊर तदि गति ।

सीता न कोमे परमल सादि, तेन निज तदि कहे गलादि म ॥ २ ॥

प्राकल आने अपुलन तार कटुरि सांकिमवण अविहार ।

अनपु रकनी वरे भादि जा । लोरी तेव वयो जिरहाव ॥ ३ ॥

इदयानि पारी के ननी जमभीरक पागे महे मली ।

बापाने तर परिमह दोर, परतत लोग निज ह भाव म ॥ ४ ॥

पम व मेतर न जगतए, महामु नी नि ओर न परत ।

मेरे का मेव (सम जयो) ते दे दे पर तादी मयो ॥ ५ ॥

१ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

एतद् दृष्ट्वा तं शब्दो ह सौ गोप्यत इति न वि पश्य ।
 शब्दार्थेन ह्यत्र तं शब्दो, अतएव इति पश्यत इति ॥
 न तद् धरि पश्यत इति न वि पश्यत इति ॥
 इति सत्यं एतद् शब्दो एतद् शब्दो इति ॥
 एतद् शब्दो इति शब्दो, परं शब्दो न वि पश्यत ।
 इति शब्दो इति शब्दो, परं शब्दो न वि पश्यत ।
 बौद्धिक प्रणालि शब्दो शब्दो शब्दो शब्दो ।
 इति शब्दो शब्दो शब्दो, शब्दो शब्दो शब्दो शब्दो ।
 इति शब्दो शब्दो शब्दो, शब्दो शब्दो शब्दो शब्दो ।
 इति शब्दो शब्दो शब्दो, शब्दो शब्दो शब्दो शब्दो ।

खनी अ० गांधी का हकी स्वयंसेवकों को छोड़ो पगी ।

दनरी गणति तय दि खरी, अर सुनिय सगति न सरा ॥१६॥

सकल गति तीन बलान दय परक पर सोम गुमान ।

व सार ल गुर गिर गाय, सर राजने सरर दाव ॥१७॥

अ नर दाय वद निष्ण, बदलीपर व पुन प्रमान ।

कृष्णभर की जाला गुरल गाय क०, विगलन ॥१८॥

तप भार ये निष्ण भाव मुनि दाय मूला में काय ।

उपनिषो व० दि मेद चाव नरवने उठे न सरद ॥१९॥

रा० यदि कह निषण मर, लझन मुनि पय यदि भरे ।

गायर गों पद निषण वन्धा मरक वने गुनगा ॥२०॥

॥२॥ अमोक्ष मुरगति पाप मनि नखनकी मही बसतान ।
 आसिर पथे पद गिबगम पुन्य दालाया शिवने चोक्त ॥१॥
 य पद दाय सु पुनः पीव क्षपकागें म् खगपीन ।
 गार हु पद बंदे गह पुनर गार हु नाई लढ ॥२॥
 गद् भये न मरग हु नय शिरार, मात मात गहि थये ।
 ये पद दान रने नहि पीन धारे दिनम म् गिबय च ॥३॥
 लकी आगति धुनत पात यमति शरि - टु तु बसतान ।
 पुनर दयभेन ही गय मन्त्र मवन हरि करय गय ॥४॥
 गार म्द अपोमति नय, वन्द कन्त्र नदापुनर य ।
 यगार पारे निवाण, वन् पुनय ये म्त्र दनन ॥५॥

तावच्छरेके पिता प्रसिद्ध स्वयं चापद हयै विद्ध ।

माना स्वभालोक दा पाय, ताविर निवसुच देग सहस्य ॥४६॥

य मय रीते मनुष्य कही उच मनि तेर्यग र तिरी सहरी ।

पचैदा पुनु मरण कराय चार गा दानन चाय ॥४७॥

बाप्यालो पदकते मर पयू हाय तै न हानि पर ।

मति आगति वरणी चौमीम, पचैदी र मुक्त पगदण ॥४८॥

ता परमे दरगो पच गदा चोदीलो दानने ददा ।

त्रिपञ्चत्रयबी दल हा म ते, दग अगति भापी निमरता ॥४९॥

थावर पच मिमत्रन तै न तर तिर्यच पचद्री तेन ।

एन ही दममें उपने मय इनहाते मिगमय चाय ॥५०॥

चौथीम दठके

ल० ६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 ल० ६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 ल० ६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 ल० ६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 ल० ६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 ल० ६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 ल० ६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 ल० ६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 ल० ६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
 ल० ६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

दाहा—

मि ना मल लोग अरु मर परमाद पणय ।

६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

चित्त चित्त गति नष्टते धरा भयै नष्टी तुलार ॥
 चित्त सारग ठर कारिके जहिये भवदवि पार ॥५६॥
 चित्त भज मय परपर लव नष्टी बाल द यह ।
 पय नष्टाजन धारिके मयचर्यों जक दह ॥५७॥
 अत करण तु सुद हं चित्तधरमी आनराम ।
 न पा भवेचन करण, भापी दोलाराम ॥५८॥



त्रिय पात्ररु महाशय !

ॐ

इस प्रथ की अशुद्धिगा, पूव सस्करण की ता हमन इन
कर ही दा है । मि तु वर्तमान सस्करण में मुक्त सशोधन की
असावधानी स जो कुछ रद गर है, उसको पुनराधुनी पत्र से
शुद्ध कर पड़े ।

शुद्धाशुद्धी पत्र-ॐ

पृ १० ५ ओ का ओ मि (कामांज)

ॐ

ॐ ओ मि कामांज
दर्शन

असत्य य उभय

८८ लक्ष जालि

१ मध्य

३३ १० द्वाजान

३४ १ सत्य य उभय

५५ ११ ८० लक्ष जालि

५६ १२ २ मध्य ममध्य

सूचका

हमारे यहाँसे छपे हुए ग्रन्थ—

अनुभवप्रकाश १)

भावदीपिका २)

चामीसू-ठाणा चर्चा ॥)

नोट,—उपरोक्त ग्रन्थ वाचनाय, जिना-
हय आदि सम्भाओं को तथा परिग्रह त्यागा
श्रावक और साधुओं को निना मूल्य—मात्र
पोष्ट-खर्च में भेजे जावेंगे ।

मिशनरी प्रेस —

दि जैन उदासीनाश्रम

तुमोगज, इन्दौर

मूल्य से—
उपरोक्त ग्रन्थ—
निम्न पते से भी मिलेंगे ।

दिगम्बर जैन पुस्तकालय
गार्धर्चौर, मैरत
जैन-साहित्य प्रसारक कार्यालय
हरदा (मध्यप्रान)
